अध्याय-सूची

प्रस्तावना [पृष्ठ १०]

पहला अध्याय— (अर्जुन-मोह) पृ. १

मङ्गलगान, श्रीकृष्ण का दूतत्व, युद्धनिश्चय, अर्जुन का मोह, युद्ध बन्द करने की प्रार्थना।

दूसरा अध्याय — (निर्मोह) पृ. ८

श्रीकृष्ण का वक्तव्य—नातेदारी की व्यर्थता [गीत २] अन्याय का स्मरण [गीत ३] निर्मोह बनकर कर्म करने की प्रेरणा, अन्याय का प्रतिकार [गीत ४] स्वार्थी और अन्यायी की नातेदारी व्यर्थ [गीत ५] स्वार्थ के लिये नहीं किन्तु न्यायरक्षण के लिये समभावी बनकर कर्म करने की प्रेरणा।

तीसरा अध्याय — [अनासक्ति] पृ. १४

अर्जुन—युद्ध और समभाव एक साथ कैसे रहें? **श्रीकृष्ण**—सारा संसार विरोधों का समन्वय है [गीत ६], समन्वय के दृष्टान्त [गीत ७], **अर्जुन**—निरर्थक युद्ध क्यों करूं? [गीत ८] **श्रीकृष्ण**—संसार नाटक शाला है नाटक के पात्र की तरह काम कर [गीत ९], सच्चा खिलाड़ी बन (गीत १०), खिलाड़ी बालकों से योग सीख (गीत ११)। **अर्जुन**—एक मनको विभक्त कैसे करूं!

श्रीकृष्ण—पनिहारी की तरह मनको विभक्त कर (गीत १३) स्थितिप्रज्ञ बन और कर्मकर।

चौथा अध्याय — (स्थिति-प्रज्ञ) पृ. २०

स्थितिप्रज्ञ का स्वरूप—सत्य अहिंसा पुत्र, धर्म-जातिवर्ण लिंग-कुल-समभावी, निःपक्ष, विचारक, इन्द्रियवशी, मनोजयी, अहिंसक और न्यायरक्षक, शीलवान्, अपरिग्रही, मदहीन, नीतिमान्, निःकषाय, पुरुषार्थी, कलाप्रेमी, कर्मठ, निर्द्वन्द, यश अयश का जयी, सेवाके पारितोषक से लापर्वाह, उत्साही सच्चा साधु जो हो वही स्थितिप्रज्ञ है ऐसा स्थितिप्रज्ञ बनकर कर्मकर।

पाँचवाँ अध्याय—(सर्व-जाति-समभाव) पृष्ठ २७

अर्जुन के द्वारा श्रीकृष्ण की स्तुति और शंका-जाति-समभाव क्यों? क्या विषमता आवश्यक नहीं है। **श्रीकृष्ण का उत्तर**—विषमता आवश्यक है पर समताहीन नहीं (गीत १४) मनुष्य जाति एक है उसमें जाति भेद न बना (गीत १५) जातियाँ कर्म-प्रधान हैं (गीत १६) जाति-भेद बाज़ार की चीज़ है, देशकाल देखकर सुविधानुसार रखना चाहिये, मद न करना चाहिये [गीत १७]। **अर्जुन**—जातिभेद प्राकृत न हो पर निःसार क्यों? वह कभी अनुकूल और कभी प्रतिकूल क्यों? **श्रीकृष्ण**—जातिभेद जब बेकारी दूर करता था और वैवाहिक आदि स्वतंत्रता में बाधक न था तब अच्छा था अब वह विकृत है। भेद रहे पर जाति-भेद बनकर नहीं, जाति-मोह की बुराइयाँ, तू जाति-कुल कुटुम्ब आदि का मोह छोड और कर्म कर।

छट्ठा अध्याय -- (**नर-नारी–समभाव**) **पृ. ३७**

अर्जुन--नर नारी में वैषम्य है फिर सर्व-जाति-समभाव कैसे ? **श्रीकृष्ण**—दोनों में गुण दोष हैं ? वैषम्य परिस्थिति–जन्य है, पत्नी शब्द का अर्थ, शारीरिक विषमता पूरक है, दोनों के सम्मिलन मे पूर्णता है, घर और बाहर के भेद ने विषमता बनाई, नर नारी समभाव होता तो द्रौपदी का अपमान न होता उस समभाव के लिये कर्म कर ।

सातवाँ अध्याय -- (**अहिंसा**) **पृष्ठ ४५**

अर्जुन--मैं सब जगह समभाव रखने को तैयार हूं पर पुण्य पाप समभाव कैसे रक्खूं ? तुम अहिंसा और हिंसा में समभाव रखने को क्यों कहते हो ? **श्रीकृष्ण**-बाहिरी हिंसा को ही हिंसा न समझ, कभी हिंसा अहिंसा हो जाती है कभी अहिंसा हिंसा । हिंसा के पांचभेद-स्वाभाविकी, आत्मरक्षिणी, पररक्षिणी, आरम्भजा, संकल्पजा, '**इन में पांचवां भेद त्याज्य है** ।' अहिंसा के छः भेद-बंधुत्वजा, अशक्तिका, निरपेक्षिणी, कापटिकी, स्वार्थजा, मोहजा । इनमें से बंधुत्वजा अहिंसा ही वास्तविक अहिंसा है । तेरी अहिंसा मोहजा है उसका धर्म से सम्बन्ध नहीं और तेरी हिंसा आत्मरक्षिणी है। हिंसा अहिंसा निरपेक्ष नहीं सापेक्ष हैं । तू हिंसा अहिंसा का निर्णय विश्व-कल्याण की दृष्टि से करके कर्तव्य कर ।

आठवाँ अध्याय--- [**सत्य**] **पृष्ठ ५४**

अर्जुन--यदि हिंसा अहिंसा सापेक्ष है तो कुछ भी निश्चय नहीं हो सकता । सत्य तो निश्चित और एकसा होता है । सत्य के अभाव मे धर्म नहीं रह सकता । **श्रीकृष्ण**--तू तथ्य और सत्य का भेद

समझ (गीत १८) सत्य कल्याण की अपेक्षा रखता है। तथ्य भी सत्य असत्य होता है अतथ्य भी सत्य असत्य होता है। तथ्य के चार भेद--विश्वास-वर्धक, शोधक, पापोत्तेजक, निंदक। अतथ्य के छः भेद--वंचक, निंदक, पुण्योत्तेजक, स्वरक्षक, पररक्षक, विनोदी। जहां न्यायरक्षण है वहां सत्य है जहां सत्य है वहां अहिंसा है इन्हें समझ और कर्तव्य मार्ग में आगे बढ़।

नवमाँ अध्याय--- **(यमत्रिक)** **पृष्ठ ६२**

अर्जुन—सारा जगत चंचल है (गीत १९) पर अगर सत्य अहिंसा रूप धर्म-चंचल हों तो अपरिग्रह शील आदि सब चंचल होजाँयेंगे। जगत मे पाप की गर्जना होगी इसलिये पुण्य पाप के निश्चित भेद बताओ।

श्रीकृष्ण का वक्तव्य--सत्य और अहिंसा मूल में अचंचल है, उनके विविध रूप चंचल हैं। **ब्रह्म** माया का दृष्टांत [गीत नं. २०] सत्य अहिंसा अचंचल है इसीलिये सभी अचंचल हैं, अचौर्य शील और अपरिग्रह का निश्चित और सापेक्ष रूप। इसके लिये अंतर्दृष्टि की प्रेरणा। उससे कर्तव्य-निर्णय कर और आगे बढ़।

दसवाँ अध्याय **(कर्तव्य-निकष)**

अर्जुन के द्वारा श्रीकृष्ण की स्तुति [गीत २१] कर्तव्य-निर्णय की कसौटी का प्रश्न। **श्रीकृष्ण**--जगत सुख चाहता है, वही कसौटी है। **अर्जुन**--यदि सुख-वर्धन कसौटी है तो सुख के लिये किये जानेवाले सब पाप धर्म होजायेंगे। **श्रीकृष्ण**--पाप से अणु भर सुख मिलता है और दुःख पर्वत के समान। सुखवर्द्धन में अपना

ही नहीं सब का विचार कर। **अर्जुन**--जब सुख ध्येय है तो पर की चिन्ता क्यों ? **श्रीकृष्ण**--जगत के कल्याण में ही व्यक्ति का कल्याण है [गीत २२] जितना ले उसस अधिक देने का प्रयत्न हो। **अर्जुन**--लेने देने के झगड़े में क्यों पड़ूं ? **श्रीकृष्ण**--हर एक व्यक्ति समाज का ऋणी है वह ऋण चुकाना ही चाहिये। **अर्जुन**-जिससे लें उसी को दें सब को क्यों ? **श्रीकृष्ण**-सभी ऐसा सोचलें तो तुझे पहले कौन देगा ? व्यक्ति की चिन्ता न कर, समाज पर नज़र रख। सब से ले, सब को दे, इस प्रकार सुखी बन। **अर्जुन**--एक को सुखी करने से दूसरे को दुःख होता है क्या किया जाय ? **श्रीकृष्ण**-जिससे विश्व अधिक सुखी हो वही कर्तव्य समझ और आत्मौपम्य विचार से कर्तव्य का निर्णय कर। हर तरह बहुजन को सुखी बनाने की कोशिश कर। **अर्जुन**-बहुजन तो पापी हैं, रावण और दुर्योधन का ही दल बहुत है। क्या पाप की जय होने दूँ ? **श्रीकृष्ण**-वर्तमान ही मत देख, सार्वकालिक और सार्वदेशिक दृष्टि से विचार कर, उसमें बहुजन न्याय के ही पक्ष में है। इस तरह अपना कर्तव्य निर्णय कर, संमोह छोड़, नपुंसक न बन और कर्तव्य कर।

ग्यारहवाँ अध्याय [पुरुषार्थ] पृ. ८०

अर्जुन--सुख की परिभाषा बताओ। सुख भीतर की वस्तु है या बाहर की ? क्या यही पुरुषार्थ है ? अथवा पुरुषार्थ क्या है ? **श्रीकृष्ण**--सुख दुःख के लक्षण। काम और मोक्ष दो मूल पुरुषार्थ। अर्थ और धर्म उनके साधन। काम और मोक्ष का स्वरूप। दोनों की आवश्यकता। **अर्जुन**--मोक्ष का यहाँ क्या उपयोग ? वह तो मरने के बाद की चीज़ है। **श्रीकृष्ण**-मोक्ष यहीं है [गीत २३]

तू चारों पुरुषार्थ प्राप्त कर । **अर्जुन**-एक ही तो दुर्लभ है चार चार की क्या बात ? **श्रीकृष्ण**-चारों तेरे हाथ में है (गीत २४) **अर्जुन**-जब मोक्ष यहीं है तो और पुरुषार्थों का क्या उपयोग ? **श्रीकृष्ण**-तीनों के बिना मोक्ष नहीं रह सकता । चारों का अलग २ वर्णन । काम के सात्विक, राजस तामस आदि भेद । काम और मोक्ष दोनों का समन्वय । यहां चारों पुरुषार्थ संकटापन्न हैं इसलिये उठ । अधर्म की माया को दूर कर । यही सब धर्मों का मर्म है ।

बारहवाँ अध्याय [**सर्व-धर्म-समभाव**] **पृ. ९१**

अर्जुन--सब धर्मों का अगर एक ही सार है तो उनमें अहिंसा हिंसा, प्रवृत्ति निवृत्ति, मूर्ति अमूर्ति, वर्ण अवर्ण, त्याग, भक्ति आदि का भेद क्यों ? **श्रीकृष्ण**-मूल मे सब एक है [गीत २५] हिंसा अहिंसा समन्वय, पशु यज्ञ, इन्द्रिय यज्ञ, कर्मयज्ञ, धनयज्ञ, श्रमयज्ञ, मानयज्ञ, तृष्णायज्ञ, क्रोधयज्ञ, विद्यायज्ञ, औषधयज्ञ, प्राणयज्ञ, कीर्त्तियज्ञ, ब्रह्मयज्ञ, आदि सात्विकयज्ञ, राजसयज्ञ, तामसयज्ञ । प्रवृत्ति निवृत्ति समन्वय, मूर्ति अमूर्ति समन्वय, वर्ण-व्यवस्था, आश्रम व्यवस्था, भक्ति, त्याग, सब धर्म निर्विरोध हैं और वे **कर्मयोग** का संदेश देते हैं इसलिये तू न्याय रक्षण के लिये कर्म कर ।

तेरहवाँ अध्याय [**धर्म शास्त्र**] **पृ. १०४**

अर्जुन-के द्वारा कृष्ण-स्तुति [गीत नं. २६] उसका प्रश्न-धर्म जब एक है तो उनके दर्शन भिन्न क्यों ? **श्रीकृष्ण का वक्तव्य**-धर्म शास्त्र का स्थान [गीत नं. २७] दर्शनादि शास्त्रों की जुदाई । **अर्जुन**-मुक्ति, ईश्वर, परलोक आदि धर्म में न रहें तो धर्म क्या रहे ? **श्रीकृष्ण**-विश्वहित ही धर्म है । मुक्ति की मान्यता पर विचार ।

ईश्वर मान्यता पर विचार। निरीश्वरवादी जगत् [गीत २८] अकर्मवादी जगत् [गीत २९] वास्तविक ईश्वरवाद और कर्मवाद। परलोक-विचार। द्वैताद्वैताविचार। वास्तविक द्वैताद्वैत। किसी भी दर्शन में धर्म के प्राण डालकर विश्व-हित के लिये कर्तव्य कर। न्याय को विजयी बना, अन्याय को पराजित कर।

चौदहवाँ अध्याय (विराट् दर्शन) पृ. ११९

अर्जुन--विविध धर्म-ग्रन्थों का निर्णय कैसे करूँ ? श्रद्धा और तर्क की असफलता। **श्रीकृष्ण**--श्रद्धा और तर्क दोनों का मेल कर। श्रद्धा के सत्व रजस् तम भेद। तर्क का उपयोग। **अर्जुन**-तर्क कल्पना रूप है, उसका विचार व्यर्थ है। **श्रीकृष्ण**-तर्क अनुभवों का निचोड़ है, उसमें कल्पना का मिश्रण न कर। देव, शास्त्र, गुरु सब की परीक्षा कर। **अर्जुन**--देव, शास्त्र, गुरु बहुत हैं, मैं कैसे पहचानूँ ? **श्रीकृष्ण**-देव वर्णन, गुणदेव, व्यक्तिदेव (गीत ३०) शास्त्र, विधि-शास्त्र, दृष्टांत शास्त्र। गुरु, गुरु की असाम्प्रदायिकता, गुरु-कुगुरु का अंतर। तू विचारक बन और दुनिया को पढ़, (गीत ३१) तुझे भगवान सत्य का विराट् दर्शन होगा। **अर्जुन** का विराट् दर्शन, सत्येश्वर का विराट् रूप, अर्जुन की निर्मोहता और कर्तव्य तत्परता।

[समाप्त]